© 2018 IJSRSET | Volume 4, Issue 7, March-April-2018
Print ISSN: 2395-1990 | Online ISSN : 2394-4099 | Page No : 630-635

प्राचीन वाङ्.मय में शान्ति शिक्षा

डॉ. दिनेश कुमार यादव
सहायकाचार्य(सं.शि.)
शिक्षाशास्त्र विभाग
राष्ट्रिय संस्कृत संस्थान, जयपुर परिसर

शोधालेख सार– आज के भौतिकतावादी मशीनरी युग में विश्व शान्ति की कल्पना पाश्चात्य दृष्टिकोण से आकाश पुष्प की भांति है। वर्तमान परिस्थितियों में विश्व शान्ति का मार्ग भारतीय वैदिक एवं संस्कृत वाङ्मय द्वारा सरलता से प्रशस्त किया जा सकता है। आज मानव की दिनचर्या को संयमित व संतुलित करने की आवश्यकता है। आज पुनः शान्ति पाठ के अक्षरशः पालन के साथ दिनचर्या आरम्भ करने की आवश्यकता है। संतुलित जीवन जीने के लिए योगाभ्यास व अध्यात्म सर्वश्रेष्ठ मार्ग है।
मुख्य शब्द– वैदिक, संस्कृत, वाङ्मय, भौतिकतावादीश मशीनरी, शान्ति, पाठ।

"शान्ति कीजिये प्रभु त्रिभुवन में, जल में, थल में और गगन में,
अन्तरिक्ष में अग्नि–पवन में, औषधि, वनस्पति, उपवन में
सकल विश्व में अवचेतन में। शान्ति राष्ट्र निर्माण सृजन में,
नगर ग्राम में और भवन में
जीवमात्र के तन में, मन में और जगत् के हो कण–कण में
ऊँ शान्तिः शान्तिः शान्तिः।।

प्रस्तावनाः–

सृष्टि की प्रत्येक कृति चाहे मानव हो, जीव हो या प्रकृति हो अन्तर्मन में सर्वदा शान्ति की कामना करता है। इस प्रकार की शान्ति जो उसके उत्कर्ष के मार्ग को प्रशस्त कर सके। भारतीय शिक्षा व्यवस्था में षोडष संस्कारों को स्थान दिया गया है जिसमें विद्यारम्भ का विधान उपनयन संस्कार से है। इन संस्कारों का उद्देश्य पूर्व संस्कार जनित दोषों को प्रक्षालन कर मानव को शुद्ध और सुसंस्कारित बनाना है, जिससे एक हाड मांस के लोथड़े को मानवीयता से युक्त मानव बनाया जा सके। परिणामतः वह शान्ति की कामना करता हुआ आत्माभ्युदय का प्रयत्न कर सके। गीता के महत्व के संदर्भ में कहा गया है–

गीता सुगीता कर्त्तव्या किमन्यैः शास्त्रचिन्तनैः।
या स्वयं पद्मनाभस्य मुखपद्माद् विनिःसृता।।
नास्ति बुद्धिरयुक्तस्य न चायुक्तस्य भावना।
न चाभावयतः शान्तिः अशान्तस्य कुतस्सुखम्।।
विहाय कामान्यः सर्वान् पुमांश्चरति निःस्पृहः।
निर्ममो निरहङ्कारो स शान्तिमधिगच्छति।

शान्ति के बिना सुख की कल्पना भी नहीं की जा सकती। जंगल में सर्वदा अपने अहंकार व श्रेष्ठता के भ्रम में भय व्याप्त करने वाला शेर भी कुछ पल शान्त वातावरण में जीने की कामना करता है। आतंक से सारी

© 2018 IJSRSET | Volume 4, Issue 7, March-April-2018
Print ISSN: 2395-1990 | Online ISSN : 2394-4099 | Page No : 630-635

दुनिया में भय का वातावरण बनाने वाले लोग भी अपनी संतति को उस क्षेत्र में न भेजकर उन्हें अपने से दूर किसी शान्त स्थान पर अध्ययन व जीवन यापन के लिए भेजते हैं।

शान्ति शिक्षा का उद्भव एवं विकास–

जिस शान्ति शिक्षा को आज के समाज के लिए अनिवार्य मानते हुए इसे शैक्षिक पाठ्यक्रमों का अंग बनाने की चर्चा समूचे विश्व में हो रही है, उस शान्ति शिक्षा के सहज व स्वाभाविक दर्शन हमारी वैदिक कालीन शिक्षा में होते हैं। वैदिक काल ही शान्ति शिक्षा का उद्भव काल है। यह कहने में कोई अतिश्योक्ति नहीं है। वैदिक काल में चाहे गुरुकुल हो या घर या फिर विद्वान् पण्डित हो या शिक्षा से दूर–दूर तक कभी सम्बन्ध नहीं रखने वाला सामान्य व्यक्ति सभी की दिनचर्या का प्रारम्भ–

"ऊँ द्यौः शान्तिरन्तरिक्षं शान्तिः।
पृथ्वीशान्तिरापः शान्तिरोषधयः शान्तिः।
वनस्पतयः शान्तिर्विश्वेदेवाः शान्तिर्ब्रह्म शान्तिः।
सर्वं शान्तिः शान्तिरेव शान्तिः सा मा शान्तिरेधि।।
ऊँ शान्तिः शान्तिः शान्तिः।।

इत्यादि शान्ति मन्त्रों से होता था जो प्रकृति में सर्वत्र शान्ति की कामना करता था। ऋग्वेद में शान्ति के मार्ग को प्रशस्त करने हेतु कहा गया है–

सप्त मर्यादाः कवयस्ततक्षुः स्तासामेकामिदश्यहुरो गत्।
अयोर्ह स्कम्भ उपमस्य नील पथां विसगै अरूणेषु तस्थौ।।[1]

महर्षियों ने स्थूल शारीरिक शक्ति और सूक्ष्म आत्मशक्ति को सम विकास के भाव से सत्कार्य में प्रवृत्त करने हेतु चोरी न करना, व्यभिचार न करना, ब्रह्महत्या न करना, गर्भपात न करना, सुरापान न करना, बारम्बार दुराचार न करना और पाप होने पर असत्य बोलकर उसको न छिपाना, इन सात मर्यादाओं के अनुरूप मानव जाति को आचरण करने हेतु निर्देश दिया है। ऋग्वेद में ही कहा गया है कि अच्छी बातें ही कानों से सुने अच्छी बातें ही आँखों से देखें–

"भद्रंकर्णेभिः श्रणुयाम देवा भद्रं पश्येमाक्षभिर्यजत्राः
स्थिरैरङ्गैस्तुष्टुवां सस्तनूभिर्व्यशेम देवहितं यदायुः।।[2]

ऋग्वेद में सभी मानवों को एक समान संकल्प रखते हुए समान हृदय व मन से पूर्ण रूप से संगठित होकरकार्य करने हेतु निर्देशित करना भी स्वाभाविक शान्ति शिक्षा देने का एक उपक्रम है।

समानी व आकूतिः समाना हृदयानि वः।
समानमस्तु वो मनो यथा वः सुसहासति।।[3]

अथर्ववेद में उल्लिखत है–

समानी प्रपा सह वोऽन्नभागः समाने योक्त्रे सह वो युनज्मि।
सम्यञ्चोऽग्निं सपर्यतारा नाभिमिवाभितः।।[4]

© 2018 IJSRSET | Volume 4, Issue 7, March-April-2018
Print ISSN: 2395-1990 | Online ISSN : 2394-4099 | Page No : 630-635

अर्थात् तुम्हारा जल पीने का स्थान सब के लिए समान हो, अन्न का भाग भी सबके लिए एक हो, समान कार्य को एक धुरी के नीचे रहकर कार्य करनेवाले तुम हो, उपासना भी सब मिलकर एक स्थान में ही करो, जैसे चक्र के आरे नाभि से जुड़े रहते हैं, वैसे ही तुम अपने समाज में एक–दूसरे के साथ मिलकर रहो।

यजुर्वेद में भी शान्ति शिक्षा का सन्देश सहज ही प्राप्त होता है–

मित्रस्याहं चक्षुषा सर्वाणि भूतानि समीक्षे।[5]

वैदिक शिक्षा के पश्चात् उपनिषदों में शान्ति शिक्षा को उचित स्थान दिया गया है जिसके कुछ उदाहरण प्रस्तुत हैं–

"सहनाववतु सह नौ भुनक्तु सहवीर्यं करवाव है.....

–कठोपनिषद् (शान्ति पाठ)

सत्यं वद। धर्मं चर। स्वाध्यायान्मा प्रमदः।

–तैत्तिरियोपनिषद् 11।1

सत्येन लभ्यस्तपसा येष आत्मा सम्यग्ज्ञानेन ब्रह्मचर्येणनित्यम्।
अन्तः शरीरे ज्योतिर्मयो हि शुभ्रो, यं पश्यन्ति यतयः क्षीणदोषाः।।

–मुण्डोकपनिषद् 3।1।5

पापाचार के उन्मूलन में सत्य के योग को निरूपित करते हुए कहा है–यह अन्तःकरण में विद्यमान ज्योतिर्मय शुभ आत्मा निश्चय ही सत्यभाषण, तप, ब्रह्मचर्य और यथार्थ ज्ञान से ही प्राप्त हो सकती है, सर्वदा दोष रहित साधक ही इसे देख पाते हैं। मनीषियों ने स्मृतियों में शान्ति शिक्षा का सन्देश देते हुए कहा है–

"ब्रह्मचर्यं दया क्षान्तिर्दानं सत्यमकल्पन।
अहिंसा स्तेयमाधुर्ये दमश्चेति यमाः स्मृताः।।
स्नानं मौनोपवासेज्यास्वाध्यायोपस्थनिग्रहाः।
नियमा गुरुशुश्रुषा शौचाक्रोधाप्रमाहताः।[6]

यम नियम के अनुपालन का उपदेश करते हुए आचार्य स्पष्ट करते हैं–

ब्रह्मचर्य (सभी इन्द्रियों का संयम) दया, क्षमा, दान, सत्य भाषण, सरलता, अहिंसा, चोरी न करना, माधुर्य (मधुर वचन बोलना) और दम (ज्ञानेन्द्रियों का दमन) यम कहे गये हैं। स्नान, मौन रहना, उपवास, देव पूजा, स्वाध्याय, लिंग निग्रह (कामुकता का त्याग) गुरु सेवा, पवित्रता, अक्रोध, प्रमाद त्याग ये नियम कहलाते हैं।

मनुस्मृतिकार ने शान्ति की स्थापना का संदेश देते हुए कहा है–

"एतद्देशप्रसूतस्य सकाशादग्रजन्मनः।
स्वं स्वं चरित्रं शिक्षेरन् पृथित्वां सर्वमानवाः।।[7]

हितोपदेश में भी शान्ति शिक्षा का उपदेश सहज ही प्राप्त होता है–

अयं निजः परो वेति गणना लघुचेतसाम्।
उदारचरितानां तु वसुधैव कुटुम्बकम्।।[8]

© 2018 IJSRSET | Volume 4, Issue 7, March-April-2018
Print ISSN: 2395-1990 | Online ISSN : 2394-4099 | Page No : 630-635

गोस्वामी तुलसीदास जी शान्ति व अहिंसा का संदेश देते हुए कहते हैं–

परहित सरस धर्म नहीं भाई।
पर पीड़ा सम नहीं अधमाई।।

इस प्रकार प्राचीनतम भारतीय वाङ्मय में शान्ति शिक्षा को स्वाभाविक रूप से सर्वत्र प्रतिपादित किया गया ओर जन सामान्य के द्वारा इसे अपने दैनिक व्यवहार में अपनाकर सर्वदा विश्वशान्ति हेतु प्रयत्न किये गये।

स्वातन्त्रयोत्तर काल में यूनेस्को (UNESCO) के World Directory of Peace Research and Training Institutions (1994) के प्रतिवेदन के अनुसार भारत में शान्ति शिक्षा के क्षेत्र में शोधकार्य के लिए पूर्व में कार्यरत 24 संस्थानों के उपरान्त 25वें संस्थान का शुभारम्भ हुआ।

राष्ट्रिय शैक्षिक अनुसंधान प्रशिक्षण परिषद् (NCERT) द्वारा राष्ट्रीयपाठ्यचर्या रूपरेखा 2005 के विकास क्रम में National Focus Group का संगठन किया। विद्यालयों में शान्ति शिक्षा के कार्यक्रम किस प्रकार से आयोजित हों इस सन्दर्भ में अपेक्षित सूचनायें इस समूह के द्वारा प्रदान की जाती है।

वर्तमान समय में शान्ति शिक्षा की आवश्यकता

जा घर प्रेम न संचरै, सो घर जान मसान।
जैसे खाल लुहार की, सांस लेतु बिनु प्राण।।

जिस व्यक्ति में दूसरे के लिए सहानुभूति नहीं, जिसके हृदय में प्रेम की हिलोरें नहीं उठती, वह जीवित होते हुए भी मृतक के समान ही है।

किसी ने फुटबाल से पूछा, "क्या कारण है कि तुम जिसके चरणों में जाती हो वहीं तुम्हें ठोकर लगाता है? फुटबाल ने उत्तर दिया "मेरे पेट में अभिमान की हवा भरी हुई है, इसलिए लोग मुझे ठोकर लगाते हैं।"

यदि आप चाहते हैं कि आपको आदर मिले तो विनम्र बने।

सबते लघुताई भली, लघुता से सब होय।
जस द्वितीया को चन्द्रमा, शीश नवै सब कोय।।

21वीं सदी में सर्वत्र शान्ति, संघर्ष निवारण, सहयोग एवं मैत्री, बन्धुत्व आदिके विकास पर बल दिया जा रहा है। क्योंकि 20वीं सदी में विश्व दो महायुद्धों की त्रासदी झेल चुका है।

शान्ति जीवन की आधारभूत आकांक्षा है, लेकिन विडम्बना है मानव यह जानते हुए भी आज अशांति के आयोजन में लगा हुआ है। यही कारण है कि अशांति कभी धर्म के रथ पर सवार होकर आती है तो कभी राजनीति की सखी बनकर प्रस्तुत होती है। यही कारण है कि विश्व की मानवता हिंसा से लहुलूहान हो चुकी है और लगभग 20 हजार छोटे–बड़े युद्धों के बाद भी निःशस्त्रीकरण एक दिवास्वप्न हो रहा है और अभी भी परमाणु बम और आतंकवाद के विस्फोटों से हमारी धरती हिल रही है। साथ ही असहिष्णुता, तीव्र वाद–विवाद, संघर्ष, परस्पर अविश्वास इत्यादि में भी अनपेक्षित वृद्धि निरन्तर हो रही है।

© 2018 IJSRSET | Volume 4, Issue 7, March-April-2018
Print ISSN: 2395-1990 | Online ISSN : 2394-4099 | Page No : 630-635

आज मानव की विजय यात्रा में शरीर बल के साथ बुद्धिबल के कारण उसकी विजयपताका तो दिखलाई दे रही है, परन्तु एक स्वाभाविक प्रश्न भी यहाँ उत्पन्न होता है कि मानव समाज में बालक, वृद्ध अशक्त और अक्षम व्यक्ति भी किस प्रकार सुरक्षित एवं संरक्षित रहें? इसका एक ही उपाय है शरीर बल व बुद्धिबल के साथ ही नीतिबल और सामाजिक मर्यादा ही मानव कल्याण का प्रमुख मार्ग हैं। मानव सभ्यता का आधार–सामाजिक और नैतिक जीवन आनुवांशिकता से कम अपितु वातावरण एवं शिक्षा से अधिक प्राप्त होता है।

आज की सामाजिक जीवन पद्धति ना तो वैदिक युगीन चार आश्रम व चार वर्णों के सिद्धान्तों का अनुसरण करती प्रतीत होती है और ना ही आज परिवार व समुदाय उस रूप में विद्यमान है जो संस्कारों के माध्यम से शांति की स्थापना का कार्य करते थे। संयुक्त परिवारों में एक सदस्य की व्यस्तता के चलते परिवार के अन्य सदस्य चाचा–चाची, ताऊ–ताई,, दादा–दादी, भाई–भाभी, इत्यादि के रूप में बालक को संस्कार देने का कार्य करते थे। परन्तु आज के सिमटते परिवारों में बालक इन सब रिश्ते नातों से संस्कार लेना तो दूर इनके अर्थ को ही नहीं जानता है। ऐसी विषम परिस्थिति में सभी आकांक्षायें शिक्षा व शिक्षण संस्थान से जुड़ जाती हैं।

अतः वर्तमान युग की इस नितान्त आवश्यकता को शिक्षक प्रशिक्षण पाठ्यक्रम में अनिवार्य रूप से सम्मिलत करते हुए विद्यालयों में इसके सैद्धान्तिक पक्ष के साथ ही इसके प्रायोगिक क्रियान्विति की भी महती आवश्यकता है। विद्यालयों के मुख्य द्वार पर ज्ञानार्थ प्रवेश, सेवार्थ प्रस्थान लिखा हुआ तो बहुत पहले से हम देखते आ रहे हैं परन्तु वास्तविक रूप में ज्ञान प्राप्त कर उसका उपयोग समाज की सेवा के लिए करना अभी भी एक चुनौती है–

तन से सेवा कीजिए, मन से भले विचार।
धन से इस संसार में करिये पर उपकार।।

विश्व शान्ति का मार्ग–

आज के भौतिकतावादी मशीनरी युग में विश्व शान्ति की कल्पना पाश्चात्य दृष्टिकोण से आकाश पुष्प की भांति है। वर्तमान परिस्थितियों में विश्व शान्ति का मार्ग भारतीय वैदिक एवं संस्कृत वाङ्मय द्वारा सरलता से प्रशस्त किया जा सकता है। आज मानव की दिनचर्या को संयमित व संतुलित करने की आवश्यकता है। आज पुनः शान्ति पाठ के अक्षरशः पालन के साथ दिनचर्या आरम्भ करने की आवश्यकता है। संतुलित जीवन जीने के लिए योगाभ्यास व अध्यात्म सर्वश्रेष्ठ मार्ग है। अधिकारों की मांग कर रहे मानव को कर्त्तव्यों का भी बोध कराने की आवश्यकता है। इन सभी मार्गों के अनुसरण से ही तो आज भी हम दुनिया को अपनी ओर आकर्षित करने में सक्षम हैं–

यूनान मिश्र रोमां सब मिट गए जहाँ से
कुछ बात है कि हस्ती मिटती नहीं हमारी।

(आजादी के बाद का भारत–विपिन चन्द्र, मृदुला मुखर्जी, पृ.सं. 8)

सदा से ही हमारी सबके सुखी जीवन की कामना पुनः विश्व शान्ति स्थापित करने का सामर्थ्य रखती है–

सर्वे भवन्तु सुखिनः, सर्वे सन्तु निरामयाः।
सर्वे भद्राणि पश्यन्तु, मा कश्चिददुःखभागभवेत्।।

© 2018 IJSRSET | Volume 4, Issue 7, March-April-2018
Print ISSN: 2395-1990 | Online ISSN : 2394-4099 | Page No : 630-635

सन्दर्भ–

1.ऋग्वेद–10 / 05 / 06
2.ण्ऋग्वेद 1 ।89 ।8
3.ऋग्वेद10 ।19 ।3
4. अथर्ववेद 3 ।30 ।6
5.यजु. 36 । ।8
6.याज्ञवल्क्यस्मृति (प्रायश्चित्ताध्याय) 312–313
7. मनुस्मृति 2 ।20
8.–हितोपदेश1 ।69